

आदिसंज्ञादि नवमादि गुण वागिष्टायां पृथग्विधो अडमानस्य सकः
लयायकसार्थचतुर्विधयुत्र सार्थमना वीक्षितसिद्धार्थग्रीष्मिष्टिप्रिय
वाद्यवाचकाच्चलजडयुगमेष्वेव निमित्तात् ॥ नृकांशो नृकांशो मः मः
मार्कण्डेयैव वायु कौशिकियुकायगुरुवागिति धिओ गते के उ क
पुनर्मूर्धन्ये वात्र सदि नायं सय विवात्राय सायुधाय सवा रुनाय अर्थः न
मः १ स्वरु ॥ नृकांशो मः मः मार्कण्डेयैव वायु कौशिकियुकाय नमः १ ॥
॥ नृकांशो नवयुगस्थानमः ४ ॥ उः यः ॥ विंशो विंशः ॥ १० ॥ स्वरु कलि

सकलसंगलयाकास्यदगुत्रियाय ३

कलखट्टनान्धधुनु मार्कण्डेयैव वायु कौशिकियुकाय नमः १ ॥
ना ॥ तदभावत्रतननीर्वाचननादकस्तु ॥ कसूमजलरुला धीम्वी कला
किं नमासि ॥ सूर्याद्यैः स माफ ॥ कर्मचिन्तादता गता ॥ यागिलि अदितवन
यद्रुयातिलादतिता ॥ ॥ धनादि का अा वित यथा कर्म ॥ यगुयादला यगुतय
ना ॥ यद्रुयातायगुतय ॥ सीसादुतदभायाता यद्रुविसर्जुन ॥ धनगकिपडा
॥ तद्वसा धन ॥ समयाक ॥ धनक्रिनसया ॥ ॥ नागियावसथविधानदवसद्वव
वीकाणषकाणचात्रपतिसी ३२ दात्रलकायके ॥ धनखसकीतयाताचायति

कालः खक्रान्तमंगल ॥ थया द्रवण समया न कथील सद्राखा यामंग
 लचायाव ॥ थ द्रवण येचवली थ नेडवनया विधि ॥ थ नाद्रवण चूरे
 नाचनू आय ॥ भल भत्र या द्रवण चाक थायाव स्वाण पुत्र मंगल ॥
 पुत्र मंगल या द्रवण दात्र जाचि ॥ थ या द्रवण अर्घ्यागु सत्रीम
 वास ॥ रिगहन नासियाव पुत्र नमस्कात्र ॥ प्राणायाम देव या ख दं
 इ को धर्मे न्यास कर न्यास ॥ डल प्राण पूजा ॥ अर्घ्यागु स पूजा ॥ आ
 नम पूजा आ वाहन श्री संवत् ॥ द्रवण चात्र येचवली खाद विधि ॥ थ

[illegible]

गर्वप्रवृत्तवत् जलचनलखत्र अत उक्ता सत्रायेंदुनाथनंद वायवि
न ॥ समया न कथं द्वाव कुरु द्वाव लते ॥ धनादीय द्वाय भत्र सयव वान
न ॥ गिकरु गिरुला ॥ त्रव गलव गखाच डीत्र खान ते धन डाख धनाया
काय धने न सायु न गं न जल न रु उमी सरं ति न ॥ आ गल च्छु वा न
॥ च्छु वाम ला पागि स न ॥ थ धने सा वा द व ना ॥ इ इण वान ॥ वि
कोण न व धं द्वाय लान जा द्या यत्रु अं युती न ॥ गल द्वा का स वि का
न ॥ व मूल या ताति न ॥ यं च वती पावे न वा रु या गा रु उती स व च

शा ता रु उती ॥ रु उती व रण क ॥ अं गु रु यु मां ग न र्क रु या ताल क य व ग
अ धु न स का ना व रु या धा व न वि कोण य ति द न ॥ दे व न रु या द्वा द न ॥
॥ म ला पाग भन ल का या या व न ॥ ध ना न व लान क र स धू य रु च उ क न न
॥ यु व न क र जा द्वा व धा ल ग कि न लु च क ॥ नुं डी धी नुं क्री सी ४ गि क
दु व को रु स र व स ल ख त स मा व द ॥ आ यु ती न स रु क र यी यु व
त्र स मा व रु ॥ ॥ क र भ य स न ॥ नि व ल कि र्थे न ॥ नि व तो या ग कि द्वा
रु ॥ व द्वा लु या दि ॥ रु व ल त या व सा यु ती स र्ग यी ड न न रु स मूल

मंगु ॥ ॥ धृपदीप ॥ तव इव लज्जामा उयत्रयेति यायावयीव नित्यं वना
वखा को सते ॥ ध्याया ह्यलप्येव वलीने ॥ वलिवि स र्जनक व न विया
मुनी ॥ धना गण प्रचाय के रुड मानन या गिलि आदित ॥ ॥ सिपति
नाया व विवले प्रचाय के को ना व स लेख त या व ॥ ॥ को ना व व र म
व व को चाय ॥ लेखने ॥ ध्याया स र्जे व पर्य उ उ र गी ॥ क ग र हा ध्याख
॥ ॥ बाल उ टा मा स ॥ बाल म स हा ॥ धने स म हा ग लेख स र्जे ॥ सु ध्या

द्विष्ट य या गी ॥ धनली के धन गुण लय न क ॥ सु ग न च र्द न र्जे
व वा न या दा र्ध स व ॥ दी व या ग क र्जे क र्मे नि र्वा र्ध र्जे व का म थ ॥ ॥ नि
द्वि सिद्धि य य क तु र्जे व वा स न सा स न ॥ या गि न्या दि ग ल स र्जे यो दा र्ध
च न मा न म ॥ ॥ धय र्जे प्र चाय के ॥ धना ग ल वा को स र्जे ख क्का ल क य
निय प्र चाय ॥ ॥ ध्याया र्जे आ स न र्जे स र्जे ॥ या गि लि आ दि ल क थ न चा
॥ ॥ ॥ ध्याया र्जे व र्जे ध्याया क र्मे य जा जा र्जे व र्जे व र्जे व र्जे व र्जे
स र्जे ॥ वली या गु र्जे य ति र्जे ॥ वलि स र्जे व र्जे ग य स्वा या ॥ र्जे ग य स्वा

इष्टुवाधाय ॥ नमो नमो स मां धर्ता वृत्र उभु सार्धं यतीरु ॥ २ ॥ अत्र
द्वितीयं तया गुणवामसंस्तुतं वीर्यं यत्र यत्र ॥ नुं दौ कीं कीं दौ न का द्वि-
नन्दनवर्तुन उद्यानपी ० सक्ति ॥ सिद्धेनां समा युक्तं निर्मितं नैव त्रमा
मृत् ॥ बुद्ध कृत्तिय विरुद्ध वलु नु कख कात्रण ॥ मेलायाग समुद्रार्थः
श्रीयागुतिगुच्छती ॥ स विनोयत्रमं लन बुद्धल विबुधमपरा ॥ यत्र
पदमवाप्ति यत्राण कितमी सुत गुत्रावायाय मूर्क्यो कर्म उल्लुप्य
हाडनी सम यया मि ॥ ॥ अद्य ॥ मार्क अर्थः ॥ नुं दौ दौ सुनी से मे

हामार्कलु हेत्र वायय काणग कियु काय सारु ॥ उजमानस्य श्रीणी
विद्यया च नैव अर्द्ध वाणी दीपयाग्न च न निमित्तार्थ कपुः श्री सुया
य अर्द्धः नमः ॥ श्री ॥ धनाया निनिवृत्ता ॥ गुणमस्कात्र ॥ अर्द्धं म
ल्ल्यादियो नायाम ॥ न्यास ॥ अर्द्ध या गुजल या गुयेडा ॥ आत्मयुजा ॥ व
ज्रनयुजा ॥ नुं दौ सी ॥ विप्रं प्रपन्नं अमृतार्तु वागनायनम ॥ २ ॥
नुं दौ श्री विप्रं प्रपन्नं न्य वीयाता वृजागनायनम ॥ ३ ॥ दौ दौ सी ॥ वि
प्रवाहिनी देवी सनायनम ॥ ३ ॥ हे दौ दौ ॥ विप्रं प्रपन्नं न्य वीयाता

गनायनम ॥ ८ ॥ ॐ श्रीं ॥ प्रियुत्रमालिनी सर्वमल्लोचनायनम
॥ ९ ॥ ॐ श्रीं ॥ वृत्तिपुत्रसाधुसिद्धासेनायनम ॥ १० ॥ ॐ श्रीं ॥
॥ श्रीचक्रसीर्गसानिष्कारव ॥ आवाहन ॥ ध्यानप्रियुत्र ॥ याहव
वीसं ध्यानयुष्यपादका ॥ धनायुजा ॥ ॐ श्रीं ॥ वदवदवाग्मादि
नीमादकूटप्रसारा ॥ रत्नवीयुजा ॥ नंदी ॥ श्री ॥ नंदी ॥ अग्निचक्र
कामनियोलयश्रीमंगीशानन्दनाथात्मकश्रीकामधराजि श्रीवृद्धात्म
गकिश्रीपादुकापूजयामि ॥ नंदी ॥ श्री ॥ रुद्रवरुणलक्ष्मीसूर्यच

[illegible]

यमलवत्रयं । यांयागिनाखानम ॥ धनचलुन ॥ श्रीवक्रवत् ननप्रम्य
॥ द्यनकसुत्रिकं कंम ॥ गृहाणपरमं देव्यं बलाटनटसुवर्णं ॥ व
दन ॥ सिंदूरमाह नदिद्यं वक्ष्यं कर्षणवृषिणी ॥ वीत्रमसपत्रं
भाकंगृहाणवीत्रवन्दिनं ॥ सिंधु ॥ अगुत्रीगणकायावर्णजत्रलवत्र ॥
॥ गीतनीचाटनचवमात्रलककुलसुतं ॥ निर्मिर्तेभाहनेदिद्यं च
कुसोताम्यवर्द्धनं ॥ भाहनि ॥ सङ्कायविर्दवनि सर्वयागसुत्र
मिनी ॥ यावर्णयावर्णनोऽनवर्तेनुसगुन्निर्तं ॥ जजमका ॥ केनी

ययगलनेवपताकार्यचवर्णुके ॥ सर्वसोतायदावेवष्टकतां
यत्रमध्वरी ॥ कर्णयनाका ॥ दृष्टिननुययवेतेलीकेषुसुदल्लरं
॥ सोताम्यसङ्कायचदहिमकेपयासदा ॥ दृष्टि ॥ कत्रवीत्रजवा
जोगीवधुकत्रकेषाटलपालिजागादिकं पृथंनमसुख्यनिवदि
नस्वान ॥ कोलयकीसुंरविकात्रम्यदिद्यासुत्रयद्विनिर्मि
नः ॥ लङ्गादिगीतः विभाङ्गलायवर्णविचिर्तेविपूत्रेश्वरी
नमः ॥ नीवेजवत्राचकेकांलथथप्रायके ॥ ॥ नतापूजनः

नुं डी श्री नुं डी सा ॥ कं यं ल रु स क ह ल स क ल डी सम स
 न ड म य म य थाम व क च के ड धा न पी ॥ ० च यो न न्य ना थ स के डी
 म हा वि य त स न्य त्री द वी प रै व क्ता स ग कि य त्रा द वी श्री पा ड
 की य ड यो मि त र्थ यामि न म ॥ नुं डी श्री नुं डी सा ॥ क य चि ल डी ॥
 ॥ रु स क ह ल डी ॥ स क ल डी ॥ श्री म हा वि य त स न्य त्री म हा
 र द्वा त्रि का श्री च के श्व री श्री पा ड की य ड यो मि त र्थ यामि ॥ नुं डी
 श्री नुं डी सा ॥ ४ श्री श्री श्री कं य चि ल रु स क ह ल स क ल डी ॥

श्री पा ड की य ड यो मि त र्थ यामि नुं डी स रु क म ल व र यै ॥ आ न न्य
 न कि रै त्र वी न न्य श्री म हा वि द्या रा डे श्व रि हं स क म ल व र यै
 श्री म हा डी ॥ नुं डी आ थानि र्थ यो ड की श्री श्री पा ड की ॥ यै च व लि ॥
 ॥ नुं य के चि न यामि नी नी पी ० आ के व डी आ थानि आ स रु डा
 म रु डा क ले डा सै दा रु डा य के चि ७ आ नि नि श्व व लि नु च लि न
 का के नि र श्व री च तु यै च न वा क नी ना व लि नु २ म म सि दि कु र्व
 नु र्द ३ रु र्द सा हा ॥ उ र्द स म य ख व ल पा य डी आ व ॥

॥ जुं ऊचत्र सर्व युदा गार्ग गल्लु न पुवा धर्क ॥ सर्व लोक कि ताथा य
रुदि कारं तु निर्मल ॥ तसा यण मृ ता कंच यंच य रु पु वर्क कं ॥ निष्कली स
कलानन्द वृक्षु न पु काण कं ॥ वीत्रु न य रं यूर्ध्व च प्र ना तु मादि तं
वर्षु च तु य या ना ऊ मं ला या रु द का वण ॥ रा ग द्व ष वि निर्म कं सु द्वे क ख य
काण कं ॥ महा दे वि न स र्क सु क र्ण मृ त सा ग रं ॥ कि चि ७ पु न ऊ धे न य जा ॥
॥ धूप ॥ व न स्य ति त्र सो ल नै रं धा र्यं गंध मरु मं ॥ आ धु य सर्व दे वा ना धू या
यं पु ति गृ क्ता ॥ ॥ दीप मृ य का सा महा कं ज सर्व गुणि मि रा य रु ॥ स जी द्वा

त्य न्क रं अति दी पा र्यं पु ति गृ क्ता ॥ ॥ अ न च तु वि ष रं व त्र से ष हि स र्म वि त
॥ म या नि व दि तं तु र्य गृ क्ता तां य त्र म श्व री ॥ ॥ न त त सिं धू त्र द कि ष तु र्य म हं
री पु द य ॥ सिं ड त्र च न्य न वि त्र पि त य र्य मा ला य रु धि वि त व स ना ऊ न धू य दी
या ॥ तां वृ ल भा द क रु ला नि सि ऊ र्व न न संपूर्ण या त्र म लि तां मि ख मि न य र्क ॥ न
ता नि स र्व च त्र ता य वि द्धि ता नि द वी य ना य रु ति द व ग ल्प दि स र्व संपूर्ण
ता रु त्र मि दं शि य संप यो नि सा नि स दा त व तु म द्र ल द रु ल द्वा ॥ जा ये ति
कू र नी या नि नी ति र्क मृ द ॥ कि ञ्चि त् अ द्धे त य जा ॥ श्री मा त त्रि त्र श्व री त

गवति कृत्वा र्थं कृत्वा तामि कं माहा कुत विना सिनी रायं हनी मू कि प्र दारो र
 वि ॥ नंद वि युन ता मि वि यु गम नि सव्व ध्वरी सर्व दानि वि ध्यं कृत्वा ग संध
 नमि दे श्री सु न्य त्री क्री नम ॥ सर्व साध क की वाण स मया ना वं सर्व दान ॥ नि
 रं क र्व नु ले वा नी सर्व दान व क मा ह के ॥ का रु ॥ या य ॥ नुं क्री णा नि व ह्व ग कि
 मृ त्वा म सि स म या ह्व स म यि नी त्वा मा कु त्व दी द्वा त्वा म य म नि मा दि रुं ल
 ग न ॥ अ वि द्या त्वं वि द्या त्वं म सि म खि ल म्ब कि त य त्वा सु ध कृ त म्ब त्वं त
 ग व दि न मा का म रु ० ० म ॥ कु र म्ब दि स रु सु य प्र क म ल् न र्क सु धा व र्ष

ली दि व्य सु य त्रि वा र्थ मा न म खी ल मा त्मा न भ र्व स दा ॥ अ यं त्मा न स र्व क ड
 रु ग व ति त्र का म यू र्वी स र्भ स्या र्ह य तु स म स्त मा गु ल रु तं वा द्या स्य द ह
 न ल ॥ या णी च क स्ति ता नि त्या क्तं पुं यी ध य दी णि कां ॥ वि द्या नं ग्रा य म्ब कृ
 प्र सा त्रा नि त्रि क न्य के ॥ अ कृ त न कृ त ना वा यि य कृ तं तु म रु ध्व नि ॥ क म्य ती म
 म दा वा नि स्ती गो र्पा ग य म्ब रु ॥ नि र्वि ध्यं वी त्र या गं तु अ दि स द्या व सा म र्भ ॥
 अ र्भ म्ब पृ थ्वी का ना नि र्वे र व तु सर्व दान ॥ ॥ य थ वा ण पु हा रा र्ण क व
 र्व र व रु वा न न ॥ त द रु व वि धी ता ना सा नि र व रु वा न न ॥ अ त्म

उद्वासा य उ रुना मा य ज्ज्ञे वा ति नि सा र्जन यो र्जा भर्त्त नि मि त्या र्थः

न जी वि द द्वा प उ उ मा न आ य रा शा ल नै श्व र्ये ज न ध न र्म ग न न वृ क्षि
य था सा स्मृ क रु ल दा यि ना र व र्त्तु ॥ अ गु र्ग ध य र्थ धू य त्या दि ॥ ॥ द
कि ण वि य न त य था ग द्वा द कि ण अ र्थ म ह र्म स य द द्य ॥ नि वि र्द्य य या
तु ॥ थ न यो गि नी यू जा ॥ ॥ र मा व द्क क यू जा त्या स ॥ आ धा र ग क्ता दि ॥
॥ नै ३ म यू रा स ना य पा ड् की यू ज या मि ॥ नै क्ती र्त्त ४ वा व द्क क र्त्त
य न म ४ ध्या त ॥ प्र ति हा या य रा ल्ता मा उ क क र्त्त सू म र्म नि र्त्त

ना २

॥ ग कि य क ४ स उ य ति व द्क क स्ता लु वा ति त था र्त्त द स सि द्ध र मा रु नि उ
उ म सा न ॥ दि दि ॥ य या उ ति ॥ नै क्ती र्त्त ४ वा व द्क क र्त्त थ व
लु रा सा या ड् की ॥ ॥ व लि ॥ गु र्त्त र्त्त ४ वा व द्क क र्त्त थ व
लो रु र्त्त र्त्त ४ वा व द्क क र्त्त थ व
य ॥ वा स्ता हा ॥ १० ॥ भा र्त्त ॥ क र क लि त क पा ल कू लु लि द लु पा नि र्त्त मू ल ति
मि र्त्त ॥ नी ला वा ल य रु प वी ता ॥ क म स म य स य र्त्त वि र्द्य वि र्द्य द र्त्त रु र्त्त
य उ व द्क क ना र्त्त सि दि द सा ध का नी ॥ अ गु र्ग न्धा दि य र्त्त ४ वा व द्क क र्त्त थ व

विष्णुप्रयानु ॥ गताक्षयपूजन ॥ ॥ न्यास आधात्रसक्यादि ॥ नून नजाना
यजाइकी ॥ ध्यान ॥ गूलैटै के उमरुके ॥ पूरु पात्रमहेश्वर ॥ दधानैत्र
कवर्तुः चरुआसिककुनायक ॥ चंदनसिंदुनादिभाहतिज्जमस्वाणपू
र्वव ॥ गयीजलि ॥ नैकीसी ॥ श्रीजीई के गुपालायनमः ॥ बलि ॥ गुत्र
स्यसमयपात्रकाय ॥ पूर्व ॥ धूपदीप ॥ सिंधुत्रदक्षिण ॥ जायकांसा
हा ॥ ॥ स्नातु ॥ गूलैजमरुत ॥ ॥ ॐ वक्तोलीखमभवच ॥ द
नक ॥ ॥ ॐ रू रू रू रू रू नायक ॥ अंगीनादिपूर्व ॥ दक्षिण

निष्कृष्टप्रयानु ॥ ॥ गलजपूजा ॥ न्यास ॥ आधात्रसक्यादि ॥ मूलासनयाइ
की ॥ नूनगमलयतयनमः ॥ ध्यान ॥ पाशकृष्णकपाल ॥ ॐ त्रिशूलैवि
गुतंस्यो ॥ यजद्विष्टिद्विंदवारं कवर्तुः गजानन ॥ चंदनसिंदुत्रभा
हनिज्जमस्वाणपूर्वव ॥ गयीजलि ॥ नैगमलवनयुगं गीगु
गलयतयनमः ॥ बलि ॥ गुत्रस्यचत्रुपात्रकाय ॥ पूर्व ॥ धूपदि
प ॥ सिंधुत्रदक्षिण ॥ जाय ॥ मूलांसा ॥ स्नातु ॥ वामनैकपूर्व
च ॥ सर्वोत्तरवयुषिनी ॥ पाश ॥ कृष्णकपाल ॥ ॐ त्रिशूलैवि

मनन ॥ अत्र गं धदि पूर्वव ॥ दक्षि लसि विधि प्रया नु ॥ पुन या
खर मं विव ल द द य व व लिय जा ॥ न्या स ॥ वद क व ग ल या गि
ली वा म्पु अ ध न या आ स न पु जा ॥ व द ना दि पूर्व व ॥ प्र या ड लि
का र्क स ॥ वलि का र्क स ॥ ॥ गि व ग कि क र पु जा ॥ पु ड ज
या ग ना य पा ड की ॥ बु क्ता धा दि मं पु न पु जा न अ धा न का
थ धा न धा न धा न न न हं इ सर्व न सर्व स वं ड द स ॥ डी न
उ नू थ ड ॥ पा ड की ॥ ॥ कु कल क र र दार का य अ लि मू र्क य

पा ड की ॥ सि हा स ना य पा ड की ॥ इ व रु क डि नि हं स डी उ ला का क र
लि डी का मा ड दा व नि कि मि म हां को र का वि ली न सा स गी पा ड की ॥ ॥
सु कल क र र दार का य अ लि मू र्क य पा ड का ॥ ॥ व नू या उ द्वा य पूर्व व ॥
धू य दि य सि द न द क्षि ण ॥ डाय ॥ का र्क स ॥ ॥ ॥ गो र्थो य रं क मा रं ग म
ल न न वृ ती क र य या गि नी अ वा म्पु अ व लु नू या व नि न र य रु न वि वि द
न ग ली स य धा धा धू य दी या मि ख म धू व लि रि च्चि का रु वि ना डि
च क र्क स य डि का ना द दे उ वि वि रु न उ रु कि मू कि प्र दा ता ॥ अत्र गं

वि

वज

धादि॥दक्षिण॥निर्विघ्नं यथा नु॥दवसक इव लवण्यो मुख उंग धा
 नं करं न्यास॥देवानूकमण आसन युजा धान॥चंदनादि पूर्वव ७॥
 गुया डालि मूल देव इ व कास॥देवानूकमण वलि॥चत्र पाय द्वाय॥
 पूर्वव ७॥सिंदूर दक्षिण॥देवानूकमण जाय॥देनूकमण तातु॥द
 क्षिण॥अंगु गंधादि॥निर्विघ्नं यथा नु॥विहाव या निवेण कि वा सं मुख
 ल धा ल॥उड मानन पूजा सा च के॥न्यास॥कां कां कुं कुं कां कुं ४ क
 व ख रं ग॥आ धा त्र ग की र्यादि॥नं ड यं व धा ना स ना य पा ड कां पू

ड यामि॥धन॥वैष्णव क पूष्पा संका सी पीच व कुं च यु त गं॥पाण्डु गुण
 वं नाली ना मुणु मा ला ग त्र सु डं॥विद्याम कु सु हा दे वं स हा वि यु त
 म हृ श्वरी॥चंदनादि पूर्वव ७॥गुया डालि॥कुं कुं कुं कुं ४ वि यु त
 त्र वी दे वी पा ड कां पू ड यामि नम॥३॥उं कुं कुं कुं लिखा
 स्व रु न्द म हा रं त्र वा य पा कां॥३॥वलि॥चत्र पा ड पा य
 ॥पू य दी प पूर्वव ७॥सिंदूर दक्षिण॥जाय॥तातु॥गाली व क क
 गालि मू ल त रं क ल मू ना त रं व यु॥सर्वा धि य उ वा न हा त ध व रा

द वा नि मा ला शु डं ॥ वी घू ७ वी ड नि व य सा ध न पि या र्द श वि स र
त य य मा ७ व य ल या व सा न स मु थ का पा ले क र्ण क र ॥ सा या क
उ ल नी ला दि ॥ अ र ग भा दि दू र्व व ७ द क्रि ष्ण नि र्वि द्यं यु या तु ॥
मा रु नि धि रा य व स क री त ॥ सु र्या र्घ्य ॥ ॥ पु न न म स्का र ॥ ७ ॥ आ
स ॥ सा मा न्या र्घ्य ॥ मू ला र्घ्य दू डा ॥ मा ल नि य ८० ७ ॥ यं च व री नि व श
कि क र्त्तु स पु न ल वि य ॥ थ व थ व स द्दि त्थ क म्म खा रु स क ल स
ता ग ता या य ॥ ॥ पु न न या नि नि या के आ द्यु का य के र्त्तु स ग ल र्घ्य ॥

॥ आ द्यु म र्घ नि र्म ल न का रु र्त्तु य वा पि थ वा न व वा र ल वि र्त्तु ॥ आ
वा पि र्त्तु त स्य क री तु नि र्त्तु क री नि ष्ण कि र्त्तु ग वा न क ल न या र्घ्य या
नि र्त्तु ग न्मा न व नू यू डा क र्त्तु त थ ॥ न व य सा द भा दि र्त्तु यं च य द्यु
नि र्त्तु उ न स क ल स र्त्तु आ द्यु भा य ॥ थ न या नि नि या के आ द्यु का य
ता ग ता या व स रु न स र्त्तु ल का र ल ती या व व नू यू डा या र्त्तु र्त्तु व
॥ न वा व नू यू डा ॥ र्त्तु र्त्तु ल र्त्तु र्त्तु र्त्तु ॥ हा उ आ र्त्तु र्त्तु त ति य ॥
सा र्त्तु र्त्तु र्त्तु ल की खा य ॥ ॥ सु र्या र्घ्य ॥ पु न न म स्का

॥ सा मा न्या र्द्य यं जा ॥ ॥
॥ आ मा यं जा ॥ श्री सै व र्मा ॥ अ वा रु न ॥ ॥ थ ना
व ल वा रु के र रु व न व लि सु र्य व व लि वि य ॥ का यु गी या ज
ये ना यु य र्व व ॥ नै के यं ॥ नै को अ मु य रु ट ॥ नै को श्री नै को
श्री ॥ रु सै को ॥ मा हा मा या ये अ मु य रु ट ॥ ध न अ र्द्य या रु ट व रु
वा हा य नै रु ट न सा य ॥ ॥ नै को श्री नै को श्री ॥ रु सै को ॥ प द वा
॥ अ र्द्य या रु ट न हा य ॥

दि
३

झाधायाव ॥ शी ग पा रा म व न य ॥ ध य न य ॥ श्री म नी म ल
पा तु स वि न र सी म लू ड यै ऊ र्ये न का मा की छ न ना उ व न्ध क न
लं वी ग ल न रा धि र्ते ॥ ग कि गु नि ड यी च न रि र्ते सा म र्ख री सा र
व ॥ ग कि सी र व म नु रा ड स रि र्ते पा तु रू ड यी च र्मे ॥ उं वा यै यी
ला नां वां स्त्रा हा ॥ ॥ थ ना तु रू ई हा य ॥ सर्व च नू द्वा य ॥ सर्व च
नू द व लं वि को ल ख द्वा न जू रू प नु च तु द्वा न वी य ॥ द थ स न
न का त य दी प द्वा य ॥ वि कू ट न ड प न य ॥ उ त्री य न ड प न य ॥ १॥

न ना या गा द न ड य य ॥ ग य ल ल ड य य ॥ न ना रु य ॥ सर्व च नू
थ ना ड न पा या नि ला न व द्वा य ॥ उ नू र्थ य नि मू द्वा क द्वा व नी का
य ॥ थ ना स क ल क थ य न यै डाय य के ॥ सर्व च नू न म स्कु र्थ स
व द व न म स्कु र्ते ॥ द र्ग न पा व र्थ यूर्ध्व य र्ग र्ते पा प ना स र्ते ॥ द द्धि
न म य के स क ल सै न म स्का न या व के ॥ डी ना नि स क व ल वा द्वा
व ॥ उ नू र्थ दी र्थ न पा द्वा य ॥ थ ना या नि लि ज्वा दी न म वा डी न वा
दी द के वि य ॥ उ नू ल थ र्मे का या व थ व थ य स वा ल ॥ ॥ थ य न य ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
येन ॥ कारि कारि मरु कारि च नृ नृ नी देखा हा ॥ आ आ धाय
सकत्र सट ॥ ॥ थना शा गया वसे वरय ॥ थयत्र पाव ॥ आ का
दि विहा लु ये व लु व नी त खा ल क सून्य नी वा लु वें द न सा सु भा
विम दि रं सा ग ल य का वि रं ॥ मूर्ति व द्म म र्य पु स न व द न श
कि ॥ स्व र्य लु लु व रं न स लु म र्य व वि नु ड ग मां व थ य रं या
नि ना ॥ नं को सी १ प व २ खा द २ म थ य २ वि हं ग म का सा प्र य सा

हा ॥ ॥ थना क भू यी ना रु ॥ थ यत्र य ॥ ला का व स नी ना न्द वी
सि न्द वा व न वि ग र्हा ॥ अ द्वा द ग र्हा जा नी सु स र्वा य का व रु
वि का ॥ को ना द म थ ना रु ग अ लि द व स थ य व ॥ स सा न र्हा
रु नी दे वी सृ ष्टि हि र्यु न का वि नी ॥ द व द व या सु रं र्हा द वि ग
रु का व रं ड नी ॥ रु य द्धि खा गि र्यं द खा पा लु को द स रं श्व नी ॥
॥ थ रं वि या व ग कि वि या व ना थ ॥ थ ना द र्हा या व लु नृ स्य म र्हा
पा लु ड ल्हा न यी ना रु ॥ सक लं ग र्ने न म स्का न ॥ ड व न जो द्वा व

कर्म धर्म धर्म यावत् खरव विदुः अहि खं कसक लं डा नी न्या
दि थ प उ य ॥ प्रान यु ना स न स्त्री मंद म दि न महा रे न वा मी कु
मूक्ति च विव अ सना था ग ल ए न व द का ली क पो ला रु नि न्या
॥ य दान का पि सा वा पि रु ग ल स क ला मा न रा के य पा ला या नि न्या
का म नृ या ऊ न च न स क ला पा न भ र खि व नु ॥ थ ना क ल स स
ना र्क जा य मु क्ता स थं ला व डा नी नी न व र्क ॥ ॥ थ ना पा र्क डा
रु वी ला व र्क रु व ल भ व ल का य क रु य द न स क मा न रा

न ३
धै र व ली स गु ण त य र्क रु ग व र्क न रु ॥ ॥ ला उ स वा द
रु वी र्क नि ध र्क द व स क इ हा या व रु व ल ॥ ॥ थ ना ऊ उ रु व
व ल आ नि नि वि य ऊ व ल पा रु वि य थ य न य ॥ म रु इ य य थ
नि धि यु क ति ता रु म रु ली न द न र्क न रु म लि म द य र्क इ य र्क
शी र क रु ना ऊ रु रु ॥ त सि ला ध नृ ना नी क रु ध र्क मा लि क म
का ल स स रु का रु व र्क र्क डी नी न नृ ना धा य रु ना मा न ना ॥ ॥
थ ना डा नी नी न स व र्क व र्क क ल्य स रु वा रु थ या व रु स र्क रु

वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॥ धनावद्वयं कविय ॥ ॥ उच्यते ॥ अथ वल्लभा कावक
 वधखरका याव खववली ॥ ॥ उच्यते ॥ कविय ॥ ॥ उच्यते ॥ कला निषि
 वदनं हकं यमनै सदा सैकुली स डपुकोक्ति सुखमात्रिका
 प्रदक्षकं ॥ ॥ साने न्या कृत मन्द हो सम कृत त्या ड ह वली
 उकी कल्या कात्र सुदन यकि हा पु लु सम्रावत नम सुवन
 नृपते दक्ष वी समीगती ॥ ॥ दर्शनं येन ते ह्यनं रुक्मिणी कदा
 यकी ॥ ॥ धर्मथल देव सकलं दत्तं कावकाव विय ॥ ॥ मरुमा क

तने कृती कलि मरु काल लस रुचो वर्ध रु कि मरु कि पुस न ग कि गिव
 सर्व स की मी मिय ॥ ॥ वल्लु भात दा दर्श दश करं द्यु न पु दं स श्व न
 वा गु नात्र मयं पवि तु ड ग ना व श्व यरी या गितो ॥ ॥ धर्म सकल गल
 धून का वती काव धव था य स वा का व ॥ ॥ अं दे ड वल ख वल पाग डा
 का तय न या द क यत्र य ॥ ॥ श्री श्री श्री यत्रा द व्या अर्द्ध रा प्रि दि य
 या मर्द्ध कल क र पु थ म क नि मि र्था थ ड ड मा न स्य स ग ल य
 वि वा रा म आ य आ रा ग्य पुं श्व य ड न ध न ल क्षी सी गति सी गान

लुप्युं डन धन लक्ष्मीं तं तिसं तान वृद्धिं प्रसु ॥ जें क्री लू स्त्री
 मथर स्त्री हा ॥ न यथा उ स वय ॥ धन अर्द्ध या के ॥ धनाम सर्वे लोप
 द नायि ना रुय का व कू र या रु उ डो गी नी नरु या थं ना स
 थं द दे व द्वा ती ल छा ये कु क्री या ये द ना द द्वा ये कु क्री या इ व ने ॥
 धना धन प्रय ॥ या उ उ व ल डा द ख व ल ये द ना डा का व डा गी नी
 द्वा ये ॥ ना दा नू रु उ या ल क स्य डन नी श्री सिद्धि लक्ष्मी प्रया वि
 द्वा का दि नि हा ति ॥ ड न व नी ख सु र सिद्धि प्रदा ॥ सो हा स सु

यदा सु सु व ल य म दि ग्गालि वि ग्गालि का सा ये श्री क वृत्त म यो ह न
 व ना स्त्रीं सु वि ना हं सदा ॥ ॥ धन डा नि नि वि या व द्वा या थं न
 द्वा व जे न त्री का या व ग ल वा का वी स द्वा न के ॥ अलि चि नि न धू र
 श्री या ग यू डा य हा हं व द्वा वि ध कू ल मा गु रं ह रं हा वि ता हं ॥ य
 सु ड न वि व ता हं हं व वि सं लि ता हं उ नू व च न ये ना हं हं व वा
 हं नि वा हं ॥ ह म ल यो उ ॥ व द्वा श्री ला व द्वा गु र व द्वा ग ल ना द
 हं व व द्वा उ ना ॥ ध व ता ला दि व नू या ग ह व हू मू न यो य द्वा व द्वा

रुनिन्द्रा ४॥ अ न्य खे व न ह च नौ दि नि च न य न वि न च ग हार
फा स्य कूल पूरु क स्य वि व न ४ यो न न दि वे न न ॥ व द्यो य च्छु द्वा
कि नी ख च ग ना न के स्ति ना रा कि ती का कि न्या मि ष स हि वा हि न
त्र सा भ द स्ति ता का कि ती ॥ पू ष्मा ख स्ति ग सा कि नी पु ति दि न ह
कि न्य ॥ अ म दु ग ॥ पु क्तं व द्वा तु या कि ती य नि वृ त्तं धी शे व वा
डि वि न ॥ स्व (य) धा मि न सा त ली न ल ड ल द्वा दि द्वा का ल स्ति ना
स द्वा स्कु ल ग न्य य ० उ नि ना स्व द्वा जा म नु जा ॥ या ग स्त्वा
कु

स ह जा शु र्व गु उ नि ना धी को लि कि म क जा या नि च ४ त ल ला स
वा न्न म दि ता स्ता सर्व दा मा तु न ॥ वि व न्नु द व ता सर्व य धी च क
व ना स्ति ता ॥ यो ० जा क्तं जा सर्व म म द ह वा व स्ति ता ॥ ॥ ध ना
कुरु स धा द्वा ग स र्ग द्वा व गु न्नी का या व थ व थ य स धा द्वा व
वा क्त य न थ ॥ ख व ल क च जा द्वा व ड व ल य ग द्वा द्वा व ग य ल या य क्त
य न थ ॥ ३ य ना द्वा अ र्द ना ग दि य या ग र्च न क ल कुरु ह ता य
च क्त नि मि र्था थ ३ उ मा न स्य स ग ल य वि वा ना ल्म आ यू आ ना य

रुतव ॥ नमः ४ श्री नमः ४ श्री य कला ग्रन्थि विष्णु चिन् ॥ जायदा
नदुत्रि त्रि श्र गम सम मावा तर्ल घने ॥ सर्व ० वम वा पा रुतु ॥ दिव्य
चक्रैः स्य मेल को ॥ संपूज का नाय प्रिया ल को ती ॥ उति लु या नि
न्यु तै पा ध ना ती ॥ ॥ दण स्य रा सु स्य पू र स्य रा द् ४ क रा ति शा नि
रु ग वा न क ल स ४ ॥ या सा मा द्वा ये हो व न सु छि तै लु व न व र्य ॥ न
म स्का ल्यो म म स्का ल्यो या नि नि र्वा नि त रै ॥ न न्य लु सा ध क कू ला
द य द र्श को य सि ॥ दा स नी षु वि व ष क म रु न्द या य ॥

नन्द तु सर्व कू ल को ल त रा व ता थ वा न्य प र नु ज दि रु द द र्श
र वा य ॥ न न्य तु सि द्ध लु त र व रु द नु क भी द्या ॥ ४ ॥ न ग ४ स म यि
ना व द्वा की क मा यो ४ ॥ ष द्या नि लि य व र वी र कू ल य सृ ता न न्य लु लु
मि य न यो दि रु सा य ला का ॥ न न्य तु सा ध क न ना न्य नि मा दि सी द्वा
॥ सा या य त नु दि ष ये द्वि ष या नि ती ती ॥ सा ण म् रु वी सृ त ति का नि म
सा व व रु क्ता य स्या लु रा य त ल य द्वा ४ म व द ॥ न न्य तु सा
ध का सि म न न्य तु कू ल या नि ति ॥ न न्य तु सा ध का वा ४ य वा न्य क

अवेष्टुर्गर्तयादि॥ यागकाय॥ ॥ अलीत्रयावा॥ ॥ मीसतया
वद्वनेळतयेकाकाययाग॥ धनापार्थनागयत्रया॥ हाथेडवत्र
पै॥ कभवृद्धिवाचीपरसविद्रुषीमणुसलिल, कभमातर्वकाय
मुखविवधः॥ ह्याकवचनी॥ अलुमिर्विसुर्कः॥ यत्रतत्रमहिमसु
वतुति॥ येसिद्धकुरुवीवदुलगतवायत्यसितिम॥ प्रसिदयत्र
दवतममद्विपुसुर्गैर्यविदात्रयदाविद्रुगदलयदहिस
र्वदुर्गा॥ विधिरिकनूतनिधचनलयदायुग्मस्यैविदविग

ऊत्रामृतिप्रसूनसूनुनिशायत्र॥ महामुदायाय॥ ॥ डाँडाँकुं
वृद्धिर्नैर्गु॥ हाथेडवत्रपैयत्रय॥ श्रीमातप्रियवगादि, पे
त्रिभिर्दुर्वाणदायिनि॥ श्रीउत्राश्वत्रगाम्काडसिद्धासिखयुसादि
तः॥ अद्भुततिमित्रीन्हाहेनडातामिमरुध्वत्री॥ कभतीकुरेयास्वामिन्॥
कभतीकुरेयास्वामिन्॥ विधिरिनर्मरुध्वनीदुवादिनीयत्रश्वत्री॥ मे
मदीनस्यदासस्यकमसुपनभध्वनि॥ आवाहनं वयुर्जावन
मजानामिमरुध्वनी॥ ममदिनस्यदासस्यकमसुपनभध्वनि॥

आवाहनं च यथा नडा नामिषि सह नी नडा नाविधिष्वेव
स्वर्गजयत्रमधुजि कर्म नाम नामा वा वा विना ना न्या गतिमम
अनुग्रहं लभेता नी द व वं ज ग यी श्वरी देवा दा ता व हो का
द व म ध मि द ड ग ॥ दे वा ड य ति स व र य द वा म र श्व र ॥ थ
व थ स र व ल वा द व लि म ड ता थ वि स ड नी पु न्ण व नी वि स
ड न ॥ वी न ड न क ग य नी ड व थ थ न म स्का व या य पु न्ण य व
य ॥ पु व रू ह र वी व की स व व अ धि डा न य ॥ नि व रू ह र वी व क
स व व पु थ कृ थ कृ थ क ॥ वी न च कु स म ल या स व व अ धि डा

तय न च का न च ग त नी व स व व पु थ कृ थ कृ थ क ॥ पु न्ण आ न
का व का य ॥ थ व थ व स व ली डा या व सा ख न स न पु न्म उ त्र क्रि य
क र्मा या डा या व द व या के त य कु क्का य ॥ थ ना अ नी स हि त न व स
या न का रा क ॥ माल द्दी न नि य या न या या व लि वि य ॥ वं ल सूर्य क
र न पु नी ड रं ति धा न रू आ व द व या के क त स क न स के क त य या
स न या स म र्थ द व स क क स क न ड रं ति धा न वि य ॥ वं ल सूर्य थ य
॥ थ व थ व स व यी न त यी न ॥ अ वि ना सा रु व द ह अ ड ग म न

पाइकीं॥ ॥ दक्षिण॥ नैवेद्यलाय पाइकीं॥ पश्चिम॥ नैवेद्यसुला
ये पाइकीं॥ उत्तर॥ वहुष्टगम॥ नैवेद्यद्वंद्वसिद्धि मार्ग गंधना
प पाइकीं॥ नैवेद्यद्वंद्वसिद्धि मार्ग गंधनी पीड कीं॥ वहुष्टगपू
जन॥ ध्यानाय पीड कीं॥ ॐ नमः॥ ५॥ हाश्राय पाइकीं॥ आ
म्र॥ ६॥ श्रीदाय पाइकीं॥ नैवेद्य॥ ७॥ कालाय ३॥ वायव्य॥
अथ यत्तु पूजर्न॥ नैवेद्यमार्ग गंधनी देवी पाइकीं॥ ८॥ नलमा
र्ग गंधनी देवी ६॥ वलमार्ग गंधनी देवी १३॥ ध्यानमार्ग गंध
नी देवी ३॥ चंडमार्ग गंधनी देवी पाइकीं॥ ९॥ वीनमार्ग गंधनी

देवा ३॥ ॐ जयमानं (गन्धर्वा देवा ३॥ ॐ) ॥ उच्छिष्टमार्गं (ग
 धर्वा देवा ३॥ पाइकां ॥ ॥ तन्नामवृत्तिं ॥ ॐ रुक्मिण्या पाइकां ॥ ॐ प्र
 रुक्मिण्या पाइकां ॥ ॐ विष्णवे रुक्मिण्या पाइकां ॥ ॐ नान्द्रुक्मिण्या पाइकां ॥
 ॐ ॥ तन्नामवृत्तिं ॥ ॐ निवायनमः ॥ ॐ गन्धर्वा नायनमः ॥ ॐ गन्धर्वा नाय
 नमः ॥ ॐ उल्लूकाय नमः ॥ ॐ गन्धर्वा नायनमः ॥ ॐ गन्धर्वा नायनमः ॥ ॐ गन्धर्वा नाय
 नमः ॥ ॐ गन्धर्वा नायनमः ॥ ॐ गन्धर्वा नायनमः ॥ ॐ गन्धर्वा नायनमः ॥ ॐ गन्धर्वा नायनमः ॥
 ॥ कूलं च उच्छिष्टं नृपाय निर्यानिम्ना ल्यसाहिक ॥ तमः उच्छिष्टं नार्थय

पूमा शुनसमयुक्तं । सर्वविधिविनासः शुभविधिनामा म्यहः ॥
 बुर्गं कौदि ॥ विदुर्विद्यं ॥ ५४ अस्तीत्यरुहः ॥ विसेहं न ॥ भावीं ग्राव
 युनृणवाय ॥ नमस्तुत ॥ कलं कसवावेकुं शुभं ॥ वत्रीपत्रीसखयि
 वल्लदकाथातल्लखसवावेकुं शुभं ॥ कलं वाळावागासनावहया ॥
 कावल्लखनयाव ऊडे मानादि नम्रुहिके के य ॥ ५५ कालं वायुवा
 डं तदयना परमं वदुयालितदु ॥ ५६ कालं वल्लुकेयु के तदयनाय
 रीमं वदुकि वीडं सहीसा ॥ ५७ नृदुविन्दु लयातनितक सनीय दीकी नध
 ला सुवर्नं दृष्टा कुतनु निखिद रुतिक नयनम्य नृउल्लो हि यायी ॥

न ५

॥ थनासकलसगादगा वूनभाकलिनविय ॥ ॥ पाननल्लखनदु
 नवीमं ठलयाय ॥ ॥ नजनंमं ठलयाय ॥ कर्मं ठलदव ॥ ॥ नवी
 वाय ॥ ॥ वगसिंधनसा नजजम धूपदीपनयवाद्रवसके ईसा
 वकंमगाविय दधु कुवाजजम ॥ ॥ सावकीवीय ॥ ऊडे मानन के
 ऊण के हाथ ऊवेनय के यात्रण याय कइ साचकं ॥ ॥ आवायुं वय
 य ॥ विद्या के वडु वल्लुजी निर्वह वदुसर्वदा ॥ नमस्तु हौर्वदर्व नम
 कय नमस्तु ॥ ॥ सीरु विसृण ॥ ॥ सुर्वदवदवी समागता ॥ ॥ येथाद